[एकाङ्की सामाजिक नाटक]

लेखक
गोविन्ददास

महाकोशल-साहित्य-माला—७ वाँ ग्रन्थ

स्पर्द्धा

गोविन्ददास

संवत् १९९२

प्रथम संस्करण] [मूल्य ।=।

प्रकाशक
महाकोशल-साहित्य-मन्दिर
गोपालबाग़, जबलपुर

मुद्रक
श्री० के० मित्रा द्वारा,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

निवेदन

यह नाटक मेरी तीसरी जेल-यात्रा के समय नागपुर-जेल में एक ही दिन में लिखा गया था।

तीन नाटक प्रकाशित होने के पश्चात् इतने शीघ्र इसे प्रकाशित कराने का विचार न था। परन्तु, सरस्वती-सम्पादक श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंहजी के विशेष आग्रह के कारण मुझे इसे सरस्वती के लिए देना पड़ा। सरस्वती के जनवरी सन् ३६ के अङ्क में यह प्रकाशित हुआ है। सम्पादकजी ने इसके अँगरेज़ी के शब्दों और वाक्यों को हिन्दी में अनुवादित करके छापा है। इसके कारण उसमें यथार्थवादिता की कुछ अंश में कमी रह गयी है। परन्तु सरस्वती का प्रचार देहातों में भी है, इसलिए उन्हें ऐसा करने को बाध्य होना पड़ा है। जिस रूप में मैंने इसे लिखा था उसी रूप में अब यह पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहा है।

जबलपुर
पौष-पूर्णिमा,
सं० १९९२

—गोविन्ददास

चिरजीवी सौभाग्यवती पुत्री

रत्नकुमारी

को

सस्नेह समर्पित

—गोविन्ददास

पात्र तथा स्थान

पात्र-पात्री —

त्रिवेणीशंकर—वकील, यूनियनक्लब का सेक्रेटरी

मिस कृष्णाकुमारी—वकील, यूनियनक्लब की ज्वाइन्ट सेक्रेटरी

यूनियनक्लब का सभापति, आठ पुरुष सदस्य, दो स्त्री-सदस्या, मार्कर आदि ।

स्थान—एक नगर

स्पर्द्धा

स्थान—यूनियनक्लब का हॉल

समय—संध्या

[हॉल वर्तमान क्लबों के मुख्य हॉल के सदृश सजा हुआ है। तीन ओर दीवारें दिखती हैं। दाहनी और बाँयीं दीवारों के बीच में एक-एक दरवाज़ा है, जिनके किवाड़ों में काँच लगे हैं। सामने की दीवार में दो बड़ी खिड़कियाँ हैं। इनके किवाड़ भी काँच के हैं। दरवाज़ों और खिड़कियों के किवाड़ खुले हुए हैं, जिनमें से बाहर के उद्यान का कुछ भाग दिखायी देता है, जो डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों में रँग रहा है। दोनों खिड़कियों के बीच में दो ऊँचे 'बिलियर्ड सोफ़ा' रक्खे हैं, और इनके ऊपर दीवार में एक घड़ी लगी है, जिसमें पाँच बज रहे हैं। दोनों सोफ़ों के सामने बिलियर्ड टेबिल है, जिसके ऊपर छः बत्तीवाला बिजली का झाड़ झूल रहा है। दाहनी खिड़की के एक ओर "क्यू (बिलियर्ड खेलने

के डंडे) स्टैण्ड' है और बाँयीं खिड़की के एक ओर बिलियर्ड का 'मार्किङ्ग बोर्ड'। दाहनी ओर की दीवार के सामने 'कार्ड (ताश) टेबिल' है, जिसके चारों ओर चार कुर्सियाँ रक्खी हैं। बाँयीं ओर की दीवार के सामने एक चौखूँटी टेबिल पर 'कैरम-बोर्ड' है। इस टेबिल के चारों ओर भी चार कुर्सियाँ हैं। हॉल में चटाई की बिछायत है। सीलिंग से कई बिजली की बत्तियाँ और पंखे झूल रहे हैं। इस समय हॉल में मार्कर को छोड़कर और कोई नहीं है। मार्कर सफ़ेद कोट और पतलून पहने तथा सिर पर तुर्की टोपी लगाये है। नेपथ्य में टेनिस के गेंदों के चलने एवं 'फ़िफ़टीन लव' इत्यादि टेनिस के प्वाइन्ट गिनने के शब्द सुन पड़ते हैं। बाँयीं ओर के द्वार से दो युवकों का प्रवेश। एक की अवस्था लगभग पैंतीस वर्ष की है और दूसरे की पचीस। दोनों अँगरेज़ी ढंग के कपड़े पहने हैं; हाथ में हैट लिए हैं।]

एक—(अपने साथी से) सीरियस! अवश्य सीरियस बात है। (कैरम-बोर्ड की टेबिल के निकट बढ़ता है।)

दूसरा—(उसी टेबिल के निकट जाते हुए) हमारे यूनियन-क्लब की विशेषता ही पुरुष और स्त्री-वर्ग का यूनियन है, मिस्टर अग्निहोत्री।

[दोनों कैरम-बोर्ड के दोनों ओर की दो कुर्सियों पर बैठ जाते हैं।]

अग्निहोत्री—हाँ, इसमें क्या सन्देह है? भारतीय समाज में अब तक स्त्रियाँ क्लबों की सदस्या ही कहाँ होती हैं? न उनके जीवन में कोई आनन्द है और न उनका स्वास्थ्य ही अच्छा रहता है। कठिनाई से तीन महिलाएँ हमारे क्लब में आयी हैं।

दूसरा—और उन्हें आते साल भर भी न हुआ कि एक सदस्य और सदस्या के बीच में ही जूती चल गयी।

अग्निहोत्री—वह भी साधारण सदस्य और सदस्या के बीच में नहीं, मिस्टर वाजपेयी पुरुष सेक्रेटरी और महिला ज्वाइन्ट सेक्रेटरी के बीच।

वाजपेयी—फिर मिस्टर शर्मा की पार्टी ने मिस कृष्णाकुमारी पर जो आक्षेप किये हैं वे अत्यन्त निन्दनीय हैं।

अग्निहोत्री—अत्यन्त निन्दनीय।

वाजपेयी—चुनाव क्या हुआ, नंगा नाच हो गया।

अग्निहोत्री—इससे अधिक नंगा नाच क्या हो सकता है कि एक प्रतिष्ठित महिला के चरित्र पर आक्षेप और वह भी पुरुष की ओर से!

वाजपेयी—(कुछ ठहरकर घड़ी की ओर देखते हुए) कुछ देर खेलोगे नहीं? अभी तो मीटिंग में विलम्ब है।

अग्निहोत्री—हाँ, हाँ, आरम्भ करो।

[दोनों कैरम खेलना आरम्भ करते हैं।]

अग्निहोत्री—(खेलते-खेलते) क्यों, मिस्टर वाजपेयी, कृष्णाकुमारी पर उस विज्ञापन में जो आक्षेप किये गये हैं उनमें कुछ सत्यता है ?

वाजपेयी—(खेल रोककर, सिर उठा, कुछ मुस्कराते हुए) मुझसे पूछते हो ! मेरी अपेक्षा तो तुम्हारा उनसे कहीं अधिक सम्बन्ध है। कई लोग तो यहाँ तक कहते हैं, कि तुमसे और उन......।

अग्निहोत्री—(खेल रोककर बीच में ही) राम ! राम ! क्या कहते हो, मिस्टर वाजपेयी ?

वाजपेयी—(पुनः खेलते हुए) क्यों ? क्या तुम भी मोरैलिटी पर विश्वास रखते हो ?

अग्निहोत्री—(पुनः खेलते हुए) चाहे मैं इस प्रकार की सेक्स-मोरैलिटी पर धार्मिक दृष्टि से विश्वास न रखता होऊँ, परन्तु समाज के सुख के लिए उस पर मेरा दृढ़ विश्वास है। मेरा और कृष्णाकुमारी का वकालत की सीनियारिटी और जूनियारिटी के अतिरिक्त और किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

वाजपेयी—मैं यह नहीं कहता कि है। मैं तो केवल इतना ही कहता हूँ कि कई लोग ऐसा कहते हैं।

अग्निहोत्री—लोगों को कुछ भी कहने में क्या लगता है ?
उस पर्चे में तो यहाँ तक लिख डाला गया है कि
विद्यार्थी-अवस्था में भी कृष्णाकुमारी का यही हाल
था। इस देश में महिलाओं ने पर्दा छोड़कर जहाँ
किसी प्रकार के भी सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया
कि उनके चरित्र पर ही आक्षेप होने लगते हैं।
उनका किसी से बात करना, किसी के घर जाना ही
उनके चरित्र को दूषित मान लेने के लिए यथेष्ट समझ
लिया जाता है।

वाजपेयी—परन्तु, मिस्टर अग्निहोत्री, मिस कृष्णाकुमारी के
सम्बन्ध में जो चर्चा हो रही है उसमें तो अवश्य
सचाई जान पड़ती है।

अग्निहोत्री—मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता, इसी लिए
तो मैंने तुमसे पूछा कि जो आक्षेप उन पर किये गये
हैं उनमें कुछ सत्यता है या...।

[दाहने द्वार से चार पुरुषों का प्रवेश। चारों युवक
हैं। टेनिस शर्ट, ढीला पतलून और टेनिस शू पहने हैं।
एक हाथ में टेनिस रेकिट लिए हैं और दूसरे हाथ में लिए
हुए रूमाल से मुँह और गर्दन का पसीना पोंछ रहे हैं।]

पहला—ए वैरी ब्रिस्क गेम वी हैड टु-डे।

दूसरा—नो डाउट।

तीसरा—ऑफ़ कोर्स।

चौथा—सर्टिनली।

पहला—(अग्निहोत्री और वाजपेयी को देखकर) ओ! मिस्टर अग्निहोत्री और वाजपेयी तशरीफ़ ले आये!

दूसरा—(कार्ड-टेबिल की ओर बढ़ते हुए) आज का इटना इंपार्टेन्ट मीटिंग का डिन भी न आयेगा डॉक्टर खान।

[चारों, कार्ड-टेबिल के चारों ओर बैठ जाते हैं।]

तीसरा—(मार्कर से) लो, मार्कर, इन रेकिटों को रख दो; और देखो, फ़ौरन कोल्ड ड्रिंक लाओ; बहुत पसीना आ रहा है। (अपने साथियों से) कहिए, सब लोग पिइयेगा न?

चौथा—मैं तो ज़रूर पियूँगा।

खान—मैं भी पियूँगा।

दूसरा—और मैं टो ज़ुरूर।

[मार्कर चारों रेकिट उठाकर बाँयें द्वार से जाता है।]

खान—(अग्निहोत्री से) कहिए, मिस्टर अग्निहोत्री, आपके जूनियर पर तो निहायत गंदा कीचड़ फेंका गया है।

अग्निहोत्री—निस्संदेह; और वह भी, डॉक्टर, एक पुरुष ने एक महिला पर फेंका है!

ख़ान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड ।

ख़ान का तीसरा साथी—आप लोगों को कदाचित् एक बात नहीं मालूम ?

ख़ान—क्या ?

वही—इसके पूर्व मिस्टर शर्मा पर इससे भी कहीं बुरे आक्षेप मिस कृष्णाकुमारी की पार्टी ने किये थे ।

अग्निहोत्री—हाँ, हाँ, वह तो मालूम है, किन्तु मिस्टर शर्मा पुरुष हैं और मिस कृष्णाकुमारी महिला ।

ख़ान का दूसरा साथी— मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड ।

ख़ान का चौथा साथी—बात यह है कि आज-कल की पब्लिक-लाइफ़ ही निहायत गन्दी हो गयी है ।

ख़ान—बेशक, बेशक ।

[मार्कर का एक बैरा के साथ प्रवेश । मार्कर एक छोटी-सी टेबिल लिए है और बैरा एक बड़ी-सी रकाबी में चार काँच के गिलास । गिलासों में बर्फ़ और लेमनेड आदि हैं । बैरा कार्ड-टेबिल के निकट अपनी छोटी टेबिल रख देता है और बैरा उस पर रकाबी । फिर दोनों एक ओर हटकर खड़े हो जाते हैं ।]

खान का तीसरा साथी—(एक गिलास उठाकर घड़ी की ओर देखते हुए) मीटिंग में तो अभी देर है। तब तक ब्रिज न हो जाय।

खान—(दूसरा गिलास उठाकर) हाँ, हाँ, तब तक तो शायद रबर भी हो जायगा।

[खान का तीसरा साथी थोड़ा-सा लेमनेड पीकर गिलास टेबिल पर रख ताश फेंटता और बाँटता है। उसके दो साथी सिगरेट जलाते हैं।]

वाजपेयी—(दाहनी ओर के द्वार की ओर देखते हुए) लीजिए, बिलियर्ड के चेम्पियन साहब और मिस्टर मजूमदार आ रहे हैं।

[दाहनी ओर के द्वार से दो युवकों का प्रवेश। दोनों की अवस्था लगभग तीस वर्ष की है। दोनों अँगरेज़ी ढंग के कपड़े पहने हैं।]

खान—हलो! मेसर्स वर्मा और मजूमदार पहुँच ही गये। भई, मीटिंग का कोरम तो हो गया।

मजूमदार—हाँ, हाँ, आज तो बड़ा आवश्यक ठो मीटिंग होना है। पर अबी मिस्टर शर्मा और मिश कृष्णाकुमारी तो आयाई नेई।

वर्मा—और सभापति महाशय भी तो नहीं आये; (घड़ी

की ओर देखकर)। देर भी है। तब तक चलो न, मिस्टर मजूमदार, बिलियर्ड ही उड़ जाय।

मजूमदार—हाँ, हाँ, हम तैयार हैं, चलो।

[दोनों बिलियर्ड-टेबिल के निकट बढ़ते हैं।]

ख़ान—(ताश के अपने पत्ते देखते हुए) टू हार्ट्स।

ख़ान का दूसरा साथी—टू स्पेड्स।

ख़ान का तीसरा साथी—थ्री हार्ट्स।

ख़ान का चौथा साथी—थ्री स्पेड्स।

ख़ान—थ्री नो ट्रम्पस।

ख़ान का दूसरा साथी—थ्री नो ट्रम्पस। वैल, डबल।

[ख़ान का दूसरा साथी पत्ता चलता है और तीसरा साथी अपने पत्ते खोलकर टेबिल पर रखता है।]

वर्मा—(बिलियर्ड खेलते हुए) कैनन।

वाजपेयी—वाह! मिस्टर वर्मा, वाह! खेलना आरंभ करते देर न हुई और गोलियाँ लड़ने लगीं।

अग्निहोत्री—ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार यूनियनक्लब में महिला सदस्या होते देर न हुई और लड़ाई आरंभ हो गयी।

ख़ान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

ख़ान—लीजिए, जनाब, हमारे क्लब में तो शायर भी मौजूद हैं। ग़ज़ब की उपमा दी है, मिस्टर अग्निहोत्री।

वर्मा—अरे, मिस्टर अग्निहोत्री ही तो आज के सच्चे हीरो हैं।

ख़ान—यह कैसे ?

वर्मा—अपने जूनियर को बचाकर ये वीरता न दिखायँगे ?

ख़ान—उनका बचाव करना तो हर मेम्बर का फ़र्ज़ है।

वर्मा—यह क्यों ?

ख़ान—इसलिए कि आदमियों का काम ही औरतों की हिफ़ाज़त करना है।

वर्मा—और शर्मा पर जो उससे कहीं घृणित आक्षेप हुए हैं ?

मजूमदार—देखो, महाशय लोगो, दोनों का बिरुद्ध जो ठो बिज्ञापन निकला है उसमें किसी का नाम नेई है। हम लोग कैशे कह शकता है कि मिस्टर शर्मा ने मिश कृष्णाकुमारी का बिरुद्ध बिज्ञापन निकाला और मिश कृष्णाकुमारी ने मिस्टर शर्मा का बिरुद्ध ?

वर्मा—पर, मेरा तो इस संबंध में मत ही दूसरा है।

ख़ान—वह क्या ?

वर्मा—इस प्रकार का अपवाद समाज का सचा जीवन है। समाज से अपवाद निकाल दीजिए, बस, समाज

मुर्दा हो जायगा। फिर चुनाव तो आज-कल की सभ्य होली है। इस समय भी यदि एक दूसरे को गालियाँ न दी जायँगी तो फिर कब दी जायँगी ? जिन्होंने वे दोनों इश्तहार लिखे हैं वे रसिक व्यक्ति हैं। गालियाँ अवश्य दी हैं, पर कितनी सुन्दरता से, एक-एक वाक्य, शब्द और मात्रा से रस टपकता है।

ख़ान का तीसरा साथी—और फिर एक लेखक हैं और दूसरी लेखिका।

[अग्निहोत्री को छोड़कर सब हँस पड़ते हैं।]

अग्निहोत्री—मुझे बड़ा दुःख है, मिस्टर वर्मा कि आप सारे विषय को इतना लाइटली ले रहे हैं।

ख़ान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

वर्मा—मैंने तो पहले ही कहा था कि आज के हीरो मिस्टर अग्निहोत्री हैं। हाँ, तो, मेरा इस विषय को लाइटली लेना आपको पसंद नहीं आया; लीजिए, मैं अत्यन्त गम्भीर हो जाता हूँ।

[वर्मा क्यू को बिलियर्ड टेबिल से टिका, कैरम-टेबिल के निकट की एक कुर्सी पर बैठ जाता है और अपना मुख हथेली पर रख लेता है। उसकी मुख-मुद्रा अत्यन्त ही गम्भीर हो जाती है। आँखें बंद हो जाती हैं, भवें ऊपर

को चढ़ जाती हैं और नाक के नथुनों से ज़ोर ज़ोर से साँस निकलने लगती है। सब लोग ज़ोर से हँस पड़ते हैं।]

ख़ान—लीजिए, जनाब, हमारे क्लब में शायर मेम्बर ही नहीं, पर एक्टर्स भी हैं।

[सब लोग फिर हँस पड़ते हैं।]

वर्मा—(फिर खड़े हो क्यू उठाकर खेलते हुए) देखिए, मिस्टर अग्निहोत्री, मेरे मतानुसार संसार में हर बात को लाइटली ही लेना चाहिए। मेरी समझ में नहीं आता कि गंभीरता की आवश्यकता ही क्या है।

ख़ान—है तो ठीक।

ख़ान का तीसरा साथी—अजी, बिलकुल ठीक।

वर्मा—ईश्वर ने जीवन गंभीर बनाकर मुँह लटकाये रखने के लिए नहीं दिया है, वरन हँस-बोल कर आनंद से बिता देने को दिया है।

अग्निहोत्री—आशा है, आप उपदेश देने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं।

वर्मा—ओ क्षमा कीजिए, मिस्टर अग्निहोत्री, मैं देखता हूँ कि आप मुझे बिलकुल ही मिस अण्डरस्टेण्ड कर रहे हैं। जब मैं गम्भीर होना ही निरर्थक समझता हूँ तब फिर उपदेश देने का प्रश्न ही कहाँ उठता है? पर, ठहरिए; (फिर खेलना छोड़ सबकी ओर

मुख कर) मैं एक प्रश्न पूछता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी लोग उसका सत्य उत्तर देंगे।

ख़ान—मैं तो ज़रूर दूँगा और चाहे कोई न दे।

ख़ान का तीसरा साथी—नहीं, नहीं, सब देंगे।

वर्मा—जो इश्तहार मिस्टर शर्मा और मिस कृष्णाकुमारी के विरुद्ध निकले हैं उन्हें हम लोगों में से किस-किसने कितनी बार पढ़ा है ?

ख़ान—मैं तो हिन्दी नहीं जानता, मेरे कम्पाउण्डर ने दोनों पर्चे मुझे सुनाये थे और एक-एक को मैंने तीन-तीन दफ़ा सुना।

ख़ान का दूसरा साथी—और मेरा क्लार्क ने मुझे एक-एक को डो-डो डफ़ा सुनाया।

ख़ान का तीसरा साथी—मैंने भी दो-दो बार पढ़ा।

ख़ान का चौथा साथी—मैंने सिर्फ़ एक-एक बार पढ़ा।

वाजपेयी—मैंने दो-दो बार।

मजूमदार—और हमने अपना शिरिश्तेदार शे चार-चार बार शुना है।

[सब लोग हँस पड़ते हैं।]

अग्निहोत्री—अच्छा, मैंने भी दो-दो बार पढ़ा है, पर इससे आप क्या निष्कर्ष निकालना चाहते हैं ?

वर्मा—(बिलियर्ड-टेबिल से टिक कर) मैं यह निष्कर्ष निकालना चाहता हूँ, मिस्टर अग्निहोत्री, कि इस प्रकार के पर्चे यथार्थ में हमको अच्छे मालूम होते हैं, इन अपवादों से हमारे हृदय को आनन्द प्राप्त होता है। चाहे हम कितना ही गम्भीर मुख बनाकर अपवादियों की निन्दा क्यों न करें, परन्तु उनकी बातें हमें अगाध सुख पहुँचाती हैं। हममें से यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जिसने उन पर्चों को बड़े चाव से दो-दो, तीन-तीन और चार-चार बार न पढ़ा या सुना हो। यही दशा सारे नगर की होगी। मैंने तो एक-एक इश्तहार को एक-एक बार पढ़ा है।

[सब लोग हँस पड़ते हैं।]

खान—(हँसते हुए) मिस्टर वर्मा, ख़ुद नहीं खेल रहे हैं और मालूम होता है, किसी को न खेलने देंगे। (ताश के पत्ते टेबिल पर पटक देता है।)

वर्मा—डाक्टर खान, मैं तो बीच बाज़ार में छप्पर पर खड़े होकर कहने को तैयार हूँ कि मनुष्य-स्वभाव इस प्रकार की बातों से आनन्द पाता है। लोगों की ज़बान को आप कभी बन्द नहीं कर सकते; लोग खाते घर का हैं और बात परायी करते हैं। किसी के कानों को भी आप बन्द नहीं कर सकते। लोग इस प्रकार के

अपवाद बड़े चाव से सुनते और फिर उनमें नमक-मिर्च लगाकर दूसरों में फैलाते हैं। जिन समाचार-पत्रों को हम लोकमत बनाने और जाग्रत करनेवाला समझते हैं वे तक सदा इस प्रकार के अपवादों की मुँह-फाड़ कर प्रतीक्षा किया करते हैं। किसी भी समाचार-पत्र के कार्यालय में जाकर पूछ आइए। पत्र के जिस अंक में इस प्रकार के अपवाद छपते हैं उसी की सबसे अधिक बिक्री होती है। सबसे शीघ्र और अधिक यदि कोई समाचार फैलता है तो अपवादजनक। अपवाद मनुष्य का सबसे अधिक प्रिय विषय है। हम लोगों में से प्रत्येक मनुष्य अपवाद करता है, सुनता है, नमक-मिर्च लगा उसे बढ़ाता है और उससे आनन्द पाता है। पर, हाँ, इतना अन्तर अवश्य है कि मिस्टर अग्निहोत्री और उनके सदृश विचारवाले व्यक्ति वही कार्य बुरा कहते हुए करते हैं और मैं उसे बुरा कहता ही नहीं। मैंने कहा न कि मैं तो अपवाद को समाज का जीवन मानता हूँ। (फिर खेलने लगता है।)

अग्निहोत्री—पहले तो मैं यही नहीं मानता कि इन इश्तहारों को पढ़कर सबको आनन्द हुआ है। मनुष्य केवल आनन्ददायक वस्तु को ही बार-बार नहीं

पढ़ता और सुनता, किन्तु उन बातों को भी बार-बार पढ़ता या सुनता है जो गम्भीर होती हैं।

वर्मा—तो उन पर्चों में बड़ी गम्भीर बातें थीं?

[सब लोग फिर हँस पड़ते हैं।]

अग्निहोत्री—अवश्य ऐसी बातें थीं जिनका परिणाम अत्यन्त गम्भीर निकल सकता है।

वर्मा—और उन्हें पढ़कर किसी को आनन्द नहीं आया?

अग्निहोत्री—मुझे नहीं आया, इतना मैं कह सकता हूँ।

वर्मा—आपकी क्या बात है, आप तो साधु हैं।

[सब लोग फिर हँसते हैं।]

अग्निहोत्री—(चिढ़कर रूखे स्वर से) देखिए, मिस्टर वर्मा, मज़ाक तो संसार में किसी का भी उड़ाया जा सकता है।

वर्मा—अब कोई थ्रेट न दे बैठिएगा, नहीं तो न जाने मेरी क्या दशा हो जायगी। आपका रूखा स्वर सुनकर ही मेरे हाथ-पैर काँपने लगे हैं। (हाथ-पैर काँपने लगते हैं, आँखें बन्द हो जाती हैं और क्यू हाथ से छूट ज़मीन पर गिर पड़ता है। सब लोग ज़ोर से हँस पड़ते हैं।)

खान—(हँसते हुए) एक्सलेण्ट एक्टिङ्ग, सिम्पली ड्रेमेटिक।

अग्निहोत्री—(मुस्कराकर) इसमें सन्देह नहीं, मिस्टर वर्मा सुन्दर नट हैं।

वर्मा—(अग्निहोत्री के निकट जा, झुककर तीन बार सलाम करते हुए) आदाब अर्ज़ है, आदाब अर्ज़ है।

[सब लोग फिर हँस पड़ते हैं। वर्मा क्यू उठाकर खेलने लगता है।]

अग्निहोत्री—(लंबी साँस लेकर) मिस्टर वर्मा, मैं आपसे फिर कहता हूँ कि जिस विषय को आप इतना लाइटली ले रहे हैं, तथा मुझे भय है कि आपके कारण यहाँ अब तक के उपस्थित सभी सदस्य ले रहे हैं, वह विषय इतना लाइटली लेने का नहीं है।

ख़ान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

वर्मा—पर, मैं क्या करूँ, मिस्टर अग्निहोत्री, मैं तो संसार में किसी विषय को गम्भीर मानता ही नहीं, परन्तु यदि आप हर वस्तु को गम्भीर दृष्टि के अतिरिक्त अन्य किसी दृष्टि से देखना ही नहीं चाहते तो अपवाद को गम्भीर दृष्टि से ही देख लीजिए। मैं सिद्ध किये देता हूँ कि अपवाद समाज के लिए कितना आवश्यक है।

अग्निहोत्री—समाज के लिए अपवाद आवश्यक !

वर्मा—नितान्त। बिना इसके समाज का एक व्यक्ति भी सुखी नहीं रह सकता। (फिर खेलना रोक कर क्यू को घुमाते-घुमाते) देखिए, मिस्टर अग्निहोत्री, यह जीवन-पथ फिसलन से भरा हुआ है और मनुष्य, चाहे वह अपने को कितना ही ज्ञानवान क्यों न माने, एक अज्ञानी बच्चे से अधिक नहीं है। हरएक व्यक्ति बार-बार फिसलन में फिसलता है। जब वह फिसलता है तब किसी फिसलते हुए बच्चे के समान चारों ओर दृष्टि घुमा-घुमाकर देखता है कि कोई उसकी फिसलन देख तो नहीं रहा है, परन्तु उसी बाल-प्रवृत्ति के अनुसार दूसरों का फिसलना बड़े ध्यान से देखता और उसे बढ़ा-बढ़ाकर दूसरों से कहता है। यह इसलिए कि यदि कभी उसका फिसलना और गिरना किसी ने देखा या सुना हो तो दूसरे के फिसलने और गिरने से उसका फिसलना और गिरना छिप जाय। इस प्रकार यह अपवाद एक दूसरे की फिसलन को ढाँककर हरएक को सुख देता है। अब कहिए, अपवाद अच्छी वस्तु है या बुरी।

ख़ान—वाह! मिस्टर वर्मा, वाह! आप तो इस वक्त बिलकुल ही फ़िलासफ़र हो गये!

अग्निहोत्री—परन्तु आपकी यह फ़िलासफ़ी आदि से अन्त

तक भूलों से भरी हुई है । अपवाद करने और सुनने-वाले अधिक इसलिए हैं कि संसार में इस समय मूर्ख ही अधिक हैं ।

वर्मा—और संसार सदा ऐसा ही रहनेवाला है । एक दूसरे पर हँसते हुए समय व्यतीत करना यदि मूर्खता ही मान ली जाय तो इससे अधिक बुद्धिमानी की मैं दूसरी कोई बात भी तो नहीं देखता । हँसी-खुशी से इस जीवन को व्यतीत करने से अधिक बुद्धिमानी की और बात ही क्या हो सकती है ?

ख़ान—बेशक !

ख़ान का दूसरा साथी—अनडाउटेडली ।

वर्मा—(फिर खेलना रोककर) अच्छा देखो, अब अपवाद को एक दूसरी दृष्टि से देखो ।

ख़ान—वह कौन-सी ?

वर्मा—वह यह कि इसके बिना मनुष्य-समाज के वार्तालाप में कोई आनन्द रहेगा या नहीं । मनुष्य और पशु-समाज में सबसे बड़ा अन्तर यही तो है न कि मनुष्य अपने समाज में सभ्यता-पूर्वक संभाषण कर सकता है और पशु चिल्लाते हैं ।

ख़ान—बेशक ।

वर्मा—इस संभाषण का जीवन ही अपवाद है ।

अग्निहोत्री—अपवाद नहीं, व्यंग को आप अवश्य कुछ दूर तक संभाषण का जीवन कह सकते हैं।

वर्मा—अजी, अग्निहोत्री जी, थोड़े-बहुत अपवाद के मिश्रण के बिना व्यंग हो ही नहीं सकता।

ख़ान—यह व्यंग कौन-सा जानवर है ?

वर्मा—अँगरेज़ी में आप इसे विट कह सकते हैं।

ख़ान का दूसरा साथी—ओ !

ख़ान—अच्छा, अच्छा !

अग्निहोत्री—नहीं, यह बात नहीं है। व्यंग बिना अपवाद के मिश्रण के भी हो सकता है। हाँ, व्यंग में अपवाद सरलता से मिलाया जा सकता है; परन्तु वैसा व्यंग तो आनन्ददायक न होकर विषैले डंक के सदृश दुःखदायी होता है। अपवाद-रूपी शस्त्र को लिए हुए तीन इंच लम्बी जीभ बड़े से बड़े मनुष्य को आहत कर सकती है। तलवार का प्रहार चाहे ख़ाली भी जाय, पर अपवाद का प्रहार ख़ाली नहीं जाता। वह बड़े से बड़े मनुष्य को भी धक्का लगा सकता है, चाहे वह भाषण-द्वारा जीभ की नोक से किया जाय या पर्चों के द्वारा क़लम की नोक से। फिर, मिस्टर वर्मा, यह तो पुरुष ने एक प्रतिष्ठित महिला के चरित्र पर घृणित आक्षेप किया है।

खान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

वर्मा—और जो मिस्टर शर्मा पर उससे भी कहीं बुरे आक्षेप हुए हैं वे ?

अग्निहोत्री—वह बिलकुल दूसरी बात है।

खान—पर जैसा अभी मिस्टर मजूमदार ने कहा है कि इन इश्तहारों के लिखनेवाले हमें कहाँ मालूम हैं ? दोनों पर्चे गुमनाम हैं, यहाँ तक कि जिन प्रेसों में वे छपे हैं उन तक का नाम नहीं छपा।

मजूमदार—अवश्य।

अग्निहोत्री—पर लेखकों का अनुमान करना कठिन नहीं है।

वर्मा—(फिर खेलना बन्द कर) अच्छा, मिस्टर अग्निहोत्री, अब सारे विषय को थोड़ा ज्ञान-दृष्टि से देखिए।

अग्निहोत्री—किस प्रकार ?

वर्मा—जो आक्षेप मिस कृष्णाकुमारी और मिस्टर त्रिवेणी-शंकर पर किये गये हैं वे उनके चरित्र के सम्बन्ध में ही हैं न ?

अग्निहोत्री—हाँ।

वर्मा—अब देखिए कि सेक्स-मोरैलिटी ही कहाँ तक स्वाभाविक और उचित है।

[सब लोग हँस पड़ते हैं। दाहनी ओर के द्वार से त्रिवेणीशंकर का प्रवेश। उसकी अवस्था लगभग तीस वर्ष की है। वह शेरवानी और चूड़ीदार पायजामा पहने तथा खादी की टोपी लगाये है। सोने के फ्रेम का चश्मा भी लगाये हुए हैं।]

वर्मा—ओ! हियर कम्स मिस्टर शर्मा! हिप-हिप हुर्रे!

शर्मा—(मुस्कराते हुए) ओहो! आज तो आपने मेरा बड़े ज़ोर का स्वागत किया।

खान—आज भी अगर वेलकम न किये जायँगे तो फिर कब किये जायँगे, मिस्टर शर्मा?

[शर्मा बिलियर्ड-सोफ़ा पर बैठ जाता है। नेपथ्य में मोटर आने और खड़े होने की ज़ोर से आवाज़ होती है।]

वर्मा—ओ! देयर कम्स दि प्रेसीडेंट! नगर भर में सबसे अधिक यही मोटर चिल्लाती है। ठीक भी है, जितने ज़ोर से प्रेसीडेंट चिल्लाते हैं, उतने ही ज़ोर से तो उनके मोटर को भी चिल्लाना चाहिए।

[सब लोग फिर हँस पड़ते हैं। बाँयीं ओर के द्वार से एक अधेड़ व्यक्ति का प्रवेश। शरीर में ये अन्य उपस्थित लोगों की अपेक्षा कुछ मोटे हैं। अँगरेज़ी ढंग के कपड़े पहने हैं। मोटे फ्रेम का चश्मा लगाये हैं और मोटा-सा

सिगार पी रहे हैं। सब लोगों से मिल-भेंटकर ये भी बिलियर्ड-सोफ़ा पर त्रिवेणीशंकर के निकट बैठ जाते हैं।]

ख़ान—(घड़ी को देखते हुए) तो अब मीटिंग में बहुत देर नहीं है?

सभापति—हाँ, समय होता ही है। बस, मिस कृष्णाकुमारी के आने भर का विलम्ब है। पर वे तो ठीक समय पर आ ही जायँगी। (मार्कर से) मार्कर, बीच में एक टेबिल और कुछ कुर्सियाँ लगा दो।

मार्कर—जो हुक्म हज़ूर।

[बाँयीं ओर के द्वार से मार्कर बाहर जाता है। कुछ देर तक सन्नाटा रहता है। बिलियर्ड, ताश और कैरम के खेल चलते रहते हैं। मार्कर एक बड़ी-सी गोल टेबिल तथा टेनिस के गेंद उठानेवाले लड़के (जो ख़ाकी वर्दी पहने हैं) कुर्सियाँ लेकर बाँयें द्वार से आते हैं। उसी समय नेपथ्य में घोड़े के टाप, घुँघरू और ताँगे की घंटी के शब्द सुनायी देते हैं। कुछ ही देर में ताँगा के खड़े होने की आवाज़ आती है। दाहनी ओर के द्वार से मिस कृष्णाकुमारी अन्य दो महिलाओं के साथ आती हैं। तीनों महिलायें सुन्दर युवती हैं। भिन्न-भिन्न रंगों की साड़ियाँ, शलूके, मोज़े और ऊँची एड़ी के जूते पहने हैं। कान में इयररिंग, गले में नेकलस, हाथों में काँच की दो-दो चूड़ियाँ

और बाँयीं कलाई पर रिस्टवाच है। एक महिला सोने के फ़्रेम का चश्मा भी लगाये है। सब लोग उठकर उनका स्वागत करते हैं। वे तीनों भी बिलियर्ड के दूसरे सोफ़ा पर बैठ जाती हैं। कुछ ही देर में मार्कर और लड़के हॉल के बीच के ख़ाली स्थान में एक गोल टेबिल और उसके चारों ओर १५ कुर्सियाँ रख देते हैं।]

सभापति—(घड़ी की ओर देखकर) मीटिंग का समय हो चुका। मैं समझता हूँ, हम लोगों को अपना कार्य आरम्भ कर देना चाहिए।

त्रिवेणीशंकर—जी हाँ, समय तो हो चुका।

ख़ान—फिर देर क्यों की जाय? दर्दनाक सबजेक्ट ज़रूर है, पर फ़ैसला तो करना ही होगा।

[सब खेल बन्द कर देते हैं। सभापति उठकर बीच की कुर्सी पर बैठता है। उसकी दाहनी ओर मिस कृष्णाकुमारी और बाँयी ओर त्रिवेणीशंकर बैठते हैं। बाक़ी सब व्यक्ति भी अन्य कुर्सियों पर बैठते हैं। दो कुर्सियाँ ख़ाली रहती हैं।]

सभापति—(खड़े होकर) बहनो और भाइयो, आज हम लोग यहाँ जिस कार्य के लिए एकत्रित हुए हैं उसे आप लोग भली-भाँति जानते हैं। हमारे यूनियनक्लब के इतिहास में आज का दिवस अत्यन्त सन्तापकारी है।

जिस यूनियनक्लब का उद्देश पुरुषों और महिलाओं का यूनियन कर सच्चे सामाजिक जीवन का निर्माण करना है उसी के पुरुष और महिला पदाधिकारियों में जब आज इस प्रकार का झगड़ा उठ खड़ा हुआ है तब हमारे लिए आज से अधिक दुःखदायक और कौन-सा दिवस हो सकता है ? (कुछ ठहर कर गला साफ़ करते हुए) कौंसिल का चुनाव होनेवाला है। चुनाव में एक ही क्षेत्र से खड़े होनेवाले दो प्रतिस्पर्द्धी उम्मीदवारों में स्पर्द्धा होना स्वाभाविक है, परन्तु स्पर्द्धा एक बात है और झगड़ा सर्वथा दूसरी। स्पर्द्धा में प्रतिस्पर्द्धियों की आलोचना भी स्वभाव-सिद्ध है, परन्तु आलोचना एक बात है और गालियाँ बिलकुल दूसरी। फिर आपके सामने जो विषय उपस्थित है वह साधारण कलह और तू-तू मैं-मैं का है भी नहीं, किन्तु आपके क्लब की पदाधिकारिणी महोदया के चरित्र पर घृणित आक्षेप का है और वह आक्षेप भी एक पुरुष के द्वारा किया गया है। जो पुरुष अपने को स्त्रियों के रक्षक मानते हैं, जो अपनी परित्राण-शूरता की दुहाई देते हैं वे यदि...... ।

खान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

वर्मा—(खड़े होकर) सभापति महोदय, यद्यपि आपके भाषण के बीच में मेरा बोलना असंगत जान पड़ेगा, तथापि जब मैं देखता हूँ कि जहाँ आपको अपनी कार्यवाही निष्पक्ष रूप से करनी चाहिए, वहाँ आप अपना आरम्भिक भाषण ही एक पक्ष में दे रहे हैं, तब मुझसे बिना बोले नहीं रहा जाता। मैं समझता हूँ, विषय को मीटिंग के सम्मुख उपस्थित कर देने के अतिरिक्त किसी एक पक्ष में आपका इस प्रकार का भाषण युक्ति-संगत नहीं है। मुझे क्षमा कीजिएगा, मैंने आपके भाषण के बीच में दखल दिया है, परन्तु ...।

सभापति—(मुस्कराते हुए) मिस्टर वर्मा, मैं अपने कर्त्तव्य को भलीभाँति जानता हूँ। (वर्मा बैठ जाता है।) सभापति को किसी भी विषय पर अपना व्यक्तिगत मत देने का पूर्ण अधिकार है, परन्तु ख़ैर, मुझे जो कुछ कहना था वह मैं कह चुका, और मुझे कुछ नहीं कहना है। अब आपके सामने मिस विजया अपना प्रस्ताव उपस्थित करेंगी, जिसके लिए आज की मीटिंग बुलायी गयी है। (बैठ जाता है। कुछ तालियाँ बजती हैं।)

विजया—(खड़ी होकर) जो प्रस्ताव मैं आपके सामने उपस्थित करना चाहती हूँ वह इस प्रकार है। (एक

कागज़ शलूके के जेब से निकालकर पढ़ती है।)
'यूनियनक्लब के सदस्यों की यह सभा मिस्टर त्रिवेणी-
शङ्कर शर्मा की पार्टी के द्वारा मिस कृष्णाकुमारी के
चरित्र पर किये गये आक्षेपों को सर्वथा मिथ्या,
अत्यन्त निन्दनीय और महान घृणित समझती है।
इस सभा की सम्मति है कि पुरुषों का महिलाओं पर
इस प्रकार का आक्षेप समाज में पुरुषों की ही प्रतिष्ठा
को घटाता है और महिलाओं की रक्षा के उनके नैसर्गिक
अधिकारों की इतिश्री करता है।...

खान का दूसरा साथी – (बीच ही में) मोस्ट अनशिविल-
रस एक्ट इन्डीड।

विजया—'चूँकि मिस्टर शर्मा ने अपनी पार्टी के इस
घोर पापाचार का अब तक कोई खण्डन नहीं किया
है, इसलिए यह सभा घोषित करती है कि मिस्टर
त्रिवेणीशंकर पर इस सभा का विश्वास नहीं है
और जनता कौंसिल के लिए मिस कृष्णाकुमारी
को ही अपने वोट देवे।' (कुछ ठहर कर) भाइयो
और बहनो, (लम्बी साँस लेकर) इस प्रस्ताव पर मैं
क्या भाषण दूँ। इसे पढ़नेमात्र से मेरा हृदय भर
आया है। मिस कृष्णाकुमारी पर किये गये आक्षेपों
से केवल उन्हें दुःख पहुँचा हो, केवल उनका

अपमान हुआ हो, यह बात नहीं है, इन आक्षेपों से नगर के समस्त नारी-समाज को दुःख पहुँचा है; उसका अपमान हुआ है।

खान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

कुछ व्यक्ति—शेम शेम! शेम शेम!

विजया—जो आक्षेप मिस कृष्णाकुमारी पर हुए हैं वे किस प्रकार के हैं, यह केवल आप ही लोग जानते हों यह नहीं, सारे नगर-निवासी, और वे ही नहीं, इस नगर के बाहर भी दूर दूर तक की जनता जानती है, पुरुष महिला पर इस प्रकार के आक्षेप करें, यह संसार के इतिहास में नवीन घटना है। जब मिस कृष्णाकुमारी किसी कार्य के निमित्त घर से बाहर निकलती हैं तब सड़कों पर अनेक पुरुष मुँह फेरकर हँसते और तरह-तरह के ठट्ठे उड़ाते हैं। क्या यही पुरुषों का स्त्रियों की रक्षा करने और उन्हें समानाधिकार देने का दावा है?

खान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

कुछ व्यक्ति—धिक्कार है! धिक्कार है!

विजया—यह कहा जाता है कि किस व्यक्ति ने मिस

कृष्णाकुमारी पर ये आक्षेप किये हैं, यह ज्ञात नहीं है, परन्तु यह तो बड़ी पोची दलील है। यदि मिस कृष्णाकुमारी पर किये गये आक्षेपों में मिस्टर शर्मा और उनकी पार्टी का हाथ नहीं है तो उन्होंने और उनके दल ने उस पर्चे का अब तक खण्डन क्यों नहीं किया? यदि इस इश्तहार के लेखक या मुद्रक का नाम हमें मालूम होता तो, विश्वास रखिए, इस विषय को हम क्लब में न लाकर अदालत में ले जातीं, परन्तु आज तो हमारे पास इसे इस क्लब में लाने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं है। पुरुषों ने इस क्लब को पुरुष और स्त्री दोनों वर्गों के सच्चे यूनियन के लिए स्थापित किया है। पुरुषों के अनुनय-विनय करने से हम तीन महिलाएँ इसकी सदस्या हुई हैं। यदि आप सचमुच यह चाहते हैं कि दोनों वर्गों के उत्कर्ष, दोनों वर्गों के सामाजिक जीवन के विकासार्थ इस क्लब में स्त्री-सदस्याओं की संख्या बढ़े तो यह अवसर है जब आप मेरे प्रस्ताव को पास कर स्त्री-समाज को विश्वास दिला दीजिए कि पुरुष स्त्रियों को सामाजिक और राजनैतिक जीवन में सचमुच आगे बढ़ाना चाहते हैं। इस क्लब में आज पुरुष ही अधिक संख्या में हैं, अतः उन्हें अच्छी तरह से विचार कर

लेना चाहिए कि मेरे प्रस्ताव पर मत देते समय उनका कितना बड़ा उत्तरदायित्व है। (बैठ जाती है।)

कुछ व्यक्ति—हिश्रर हिश्रर ! हिश्रर हिश्रर ! (तालियाँ।)

अग्निहोत्री—(खड़े होकर) सभापति महोदय, बहनो और भाइयो, मैं मिस विजया के प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करता हूँ। इस प्रस्ताव पर भाषण आरम्भ करते समय मिस विजया ने कहा था कि प्रस्ताव पढ़नेमात्र से उनका हृदय भर आया है, परन्तु उसके पश्चात् तो हम लोगों ने मिस विजया का करुणापूर्ण भाषण भी सुना है, अतः मेरा विश्वास है कि यहाँ एक भी पुरुष ऐसा न होगा जिसका केवल हृदय ही नहीं, परन्तु शरीर का प्रत्येक परमाणु गद्‌गद् न हो गया हो।

कुछ व्यक्ति—हिश्रर हिश्रर ! हिश्रर हिश्रर !

अग्निहोत्री—मैं यहाँ उपस्थित समस्त पुरुष सदस्यों की ओर से मिस कृष्णाकुमारी और उनकी मित्र दोनों अन्य महिलाओं को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि यदि इन आक्षेपों से उन्हें और समस्त महिला-समाज को दुःख पहुँचा है तो पुरुष-समाज में भी सभी विचारशील और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को दुःख के साथ लज्जा भी आ रही है।

कुछ व्यक्ति—हिअर हिअर ! हिअर हिअर !

अग्निहोत्री—मिस विजया ने सड़कों पर कुछ पुरुषों के हँसने और ठट्ठे उड़ाने की बात कही है। ऐसे व्यक्तियों को मैं गुण्डे कहता हूँ। परन्तु इस प्रकार के व्यक्ति पुरुष और स्त्री दोनों समाजों में रहते हैं। चूँकि इस देश में बहुत कम महिलाएँ घरों से निकलती हैं, अतः पुरुष ही इस सम्बन्ध में अधिक दोषी पाये गये हैं; परन्तु मैं कृष्णाकुमारी और उनकी अन्य दोनों मित्रों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि ऐसे इने-गिने व्यक्तियों को सारा पुरुष-समाज अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखता है।

कुछ व्यक्ति—अवश्य अवश्य ! अवश्य अवश्य !

अग्निहोत्री—मैं मानता हूँ कि मिस कृष्णाकुमारी के विरुद्ध जो पर्चा निकला है उससे यथार्थ में पुरुष-वर्ग की परित्राण-शूरता पर गहरा आघात हुआ है।

खान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

अग्निहोत्री—मैं इस क्लब के समस्त पुरुष सदस्यों की ओर से मिस कृष्णाकुमारी तथा उनके साथ ही उनकी दोनों मित्रों एवं समस्त नारी-समाज के इस महान दुःख में हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता हूँ। मुझे

विश्वास है कि इस क्लब के सदस्य मिस विजया के प्रस्ताव को स्वीकार कर तथा नगर के नागरिक मिस कृष्णाकुमारी को ही कौंसिल के लिए चुनकर मेरे इस कथन का पूर्ण समर्थन करेंगे। (बैठ जाता है।)

कुछ व्यक्ति—हिअर हिअर! हिअर हिअर! (तालियाँ।)

त्रिवेणीशंकर—(खड़े होकर) सभापति महाशय, मैं भी अपनी सफ़ाई में दो शब्द निवेदन करने का इच्छुक हूँ।

सभापति—हाँ, हाँ, आप कह सकते हैं।

त्रिवेणीशंकर—बहनो और भाइयो, सर्वप्रथम तो ईश्वर को साक्षी देकर और सत्य के नाम पर मैं यह कह देना चाहता हूँ कि मिस कृष्णाकुमारी के चरित्र के विरुद्ध जो पर्चा निकला है उसमें, परोक्ष या प्रत्यक्ष किसी भी रूप से, मेरा कोई हाथ नहीं है; न मुझे उसके लेखक या मुद्रक का ही कोई पता मालूम है।

ख़ान का दूसरा साथी—आप गॉड और ट्रूथ पर बिलीव करटा?

त्रिवेणीशंकर—यदि मुझे ईश्वर और सत्य पर विश्वास न होता तो मैंने उनका आश्रय न लिया होता; पर ख़ैर, जाने दीजिए इसे, अब इसका उत्तर सुनिए कि मैंने उस पर्चे का खण्डन क्यों नहीं किया। आपको

मालूम होगा कि उस पर्चे से भी कहीं अधिक घृणित आक्षेपों से भरा हुआ एक पर्चा मेरे चरित्र के सम्बन्ध में उस पर्चे के बहुत पहले निकला था। उसका कोई खण्डन मिस कृष्णाकुमारी और उनके दल ने नहीं किया था। अतः मैंने भी इस सम्बन्ध में मिस कृष्णाकुमारी और उनके दल का ही अनुसरण किया है।

खान का दूसरा साथी—मोस्ट अनशिविलरस एक्ट इन्डीड।

त्रिवेणीशंकर—मोस्ट अनशिवलरस एक्ट से आपका क्या अभिप्राय है? क्या आप समझते हैं कि हर परिस्थिति में महिलाओं की रक्षा का भार पुरुषों के ही कन्धों पर है?

खान का दूसरा साथी—अनडाउटेडली।

त्रिवेणीशंकर—कदापि नहीं।

कुछ व्यक्ति—शेम शेम! शेम शेम!

त्रिवेणीशंकर—चाहे आप मुझे धिक्कारें, शेम कहें या इससे भी कड़े शब्दों का उपयोग करें, परन्तु प्रत्येक

व्यक्ति को अपना मत रखने तथा उसके प्रकट करने का पूर्ण अधिकार है।

ख़ान का दूसरा साथी—हम आपका मट नई सुनना चाटा।

कुछ व्यक्ति—बैठ जाइए, बैठ जाइए।

त्रिवेणीशंकर—सभापति महाशय, मैं आज यहाँ एक अभियुक्त की हैसियत से बोल रहा हूँ। सरकारी अदालतों में भी अभियुक्त को अपनी रक्षा और बचाव के लिए सब कुछ कहने का अधिकार रहता है, फिर यह तो सार्वजनिक क्लब है। भाषण और लेखन-स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन करनेवाले पढ़े-लिखे लोगों का यह व्यवहार सचमुच ही आश्चर्यजनक है। कहिए, मैं अपना कथन पूर्ण करूँ या चुप होकर बैठ जाऊँ (बैठ जाता है।)

वर्मा—सचमुच, यह तो बड़ा अन्याय है।

कृष्णाकुमारी—(खड़े होकर) मैं सब लोगों से प्रार्थना करती हूँ कि उन्हें मिस्टर शर्मा के कथन को अवश्य सुनना चाहिए। (बैठ जाती हैं।)

सभापति—(खड़े होकर) मैं आशा करता हूँ कि सब लोग मिस्टर शर्मा के कथन को अवश्य सुनेंगे। (शर्मा

से) आप अपना कथन आरंभ कीजिए। (बैठ जाता है।)

त्रिवेणीशंकर—(खड़े होकर) धन्यवाद। मैं फिर कहता हूँ कि महिलाओं की रक्षा का भार हर परिस्थिति में पुरुषों के कन्धों पर नहीं है। वह समय अब बहुत कुछ बीत चुका है तथा शीघ्रता से बीतता जा रहा है जब महिलाओं की रक्षा का भार हर परिस्थिति में पुरुषों पर था। उस समय पुरुष अपने सुख-दुःख की कोई चिन्ता न कर, अपने शरीर की परवा न कर, अपने प्राणों को हथेली पर रखकर महिलाओं की रक्षा करते थे; इतना ही नहीं, उन्हें गृह-देवियाँ मान कर उनका सत्कार और उनका पूजन तक करते थे।

कृष्णाकुमारी—(खड़ी होकर) बीच में बोलने के लिए क्षमा कीजिए।

त्रिवेणीशंकर—नहीं, नहीं, आप मुझे इण्टरप्ट कर सकती हैं। (बैठ जाता है।)

कृष्णाकुमारी—आपके कथन से तो यह जान पड़ता है कि महिलाएँ पुरुषों के लिए कुछ करती ही न थीं। सच तो यह है कि महिलाएँ तो अपने सुखों की उतनी

चिन्ता भी न करती थीं और न आज करती हैं, जितनी पुरुष अपने सुखों की। वे तो पुरुषों के ही सुख में अपना सुख मानती थीं, उन्हें ईश्वरवत् समझती थीं। (बैठ जाती है।)

कुछ व्यक्ति—हिअर हिअर! हिअर हिअर!

त्रिवेणीशंकर—(खड़े होकर) हाँ, यह भी मैं मानता हूँ, मिस कृष्णाकुमारी, महिलाएँ भी पुरुषों को ऐसा ही मानती थीं और अनेक आज भी मानती हैं, जैसा आप कह रही हैं। वे भी उनके सुखों में ही अपना सुख समझती थीं और इस प्रकार दोनों का परस्पर संबंध...!

कृष्णाकुमारी—(खड़ी होकर) फिर इएटरप्शन के लिए क्षमा कीजिए मिस्टर शर्मा। (शर्मा बैठ जाता है।) जिस प्रकार का सम्बन्ध आप कहते हैं वह परस्पर नहीं था। महिलाओं पर अधिकतर पुरुषों के अत्याचार ही होते थे और आज भी होते हैं। (बैठ जाती है।)

त्रिवेणीशंकर—(खड़े होकर) यह भी होता था और होता है, यह भी मैं मानता हूँ, मिस कृष्णाकुमारी, परन्तु इससे जिस बात का मैं प्रतिपादन कर रहा था उसमें

कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैं कह रहा था कि हर परिस्थिति में पुरुषों पर महिलाओं की रक्षा का भार नहीं है। जिस परिस्थिति में पुरुषों पर महिलाओं की रक्षा का भार था वह अब बदल रही है।

विजया—अर्थात् निम्नक्षेत्र से महिलाएँ पुरुषों के बराबरी के क्षेत्र में आ रही हैं।

त्रिवेणीशंकर—पहले वे निम्नक्षेत्र में थीं, यह तो मैं नहीं मानता, परन्तु, हाँ, इतना मानता हूँ कि उनके और पुरुषों के कार्यों का एक क्षेत्र नहीं था। मेरा तो अब भी यही मत है कि निसर्ग ने ही दोनों को भिन्न-भिन्न प्रकार से बनाया है, अतः दोनों के कार्य-क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न होना ही स्वाभाविक है और दोनों में से कोई भी निम्न कोटि का नहीं कहा जा सकता। परन्तु जब महिलाओं ने उसी क्षेत्र में पदार्पण किया है जिसमें पुरुष हैं, तब वे यह आशा नहीं कर सकतीं कि इस परिस्थिति में भी पुरुष उनके रक्षक ही रहेंगे। ऐसी परिस्थिति में जिस प्रकार का संघर्ष पुरुषों-पुरुषों के बीच में है, उसी प्रकार का संघर्ष पुरुषों-स्त्रियों में होगा। उदाहरणार्थ, अब महिलाएँ सेना का कार्य सीख रही हैं। यदि वे सेना में भरती हुईं, जैसा कहीं-कहीं होने भी लगा है, और उन्होंने युद्ध किया जैसा कहीं

कहीं वे करने भी लगी हैं, तो क्या वे आशा करती हैं कि स्त्री-सेना को देखते ही पुरुष-सेना अपने शस्त्र रख देगी और परित्राण-शूरता के नाम पर अपने को नष्ट हो जाने देगी ?

वर्मा—(मुस्कराते हुए) ऐसा तो होना ही चाहिए। महाभारत में तो, जो पूर्व-जन्म में स्त्री था, ऐसे शिखंडी के सामने आते ही भीष्म पितामह ने शस्त्र रख दिये थे।

त्रिवेणीशंकर—(मुस्कराकर) शिखण्डी एक था और भीष्म पितामह सब नहीं हो सकते। यदि उस समय भी स्त्रियों की सेनाएँ होतीं, और वे युद्ध करने जातीं तो पुरुष-सेनाएँ कभी शस्त्रों को न रख देतीं। ख़ैर! दूसरा उदाहरण लीजिए। अब महिलाएँ पुरुषों से मल्ल-युद्ध तक करने को अग्रसर हो रही हैं। कुछ ही दिन हुए, आस्ट्रेलिया के सिडनी नगर में एक स्त्री-पहलवान डारिस एकोरोने ने एक पुरुष पहलवान लेस बीर्स के साथ कुश्ती लड़ी थी। क्या महिलाएँ यह आशा करती हैं कि वे पुरुषों को कुश्ती के लिए ललकारेंगी और इतने पर भी पुरुष या तो उनसे कुश्ती लड़ेंगे ही नहीं, क्योंकि न लड़ने पर भी उनकी शूरता में बट्टा लगता है, या परित्राण-शूरता के नाम पर चुपचाप उनके धक्का देते ही चित हो जायँगे। यही बात अन्य क्षेत्रों

के सम्बन्ध में भी है। जहाँ-जहाँ संघर्ष होगा, वहाँ-वहाँ जीवन-संग्राम के नियम का उपयोग होगा; परित्राण-शूरता का नहीं। यद्यपि मैं सत्य कहता हूँ कि मैं यह नहीं जानता कि मिस कृष्णाकुमारी के चरित्र के सम्बन्ध में वह विज्ञापन किसने निकाला है, तो भी मैं इतना कह सकता हूँ कि यदि मेरे चरित्र पर आक्षेप करनेवाला विज्ञापन न निकला होता तो कदाचित् यह भी न निकलता।

वर्मा—कदाचित् क्यों, निश्चयपूर्वक न निकलता।

त्रिवेणीशंकर—नहीं, मिस्टर वर्मा, निश्चयपूर्वक तो मैं नहीं कह सकता।

वर्मा—क्यों ?

त्रिवेणीशंकर—इसलिए कि जिस प्रकार मिस कृष्णाकुमारी के चरित्र पर आक्षेप हुए बिना ही मेरे चरित्र पर आक्षेप हुआ, उसी प्रकार मेरे चरित्र पर आक्षेप हुए बिना ही मिस कृष्णाकुमारी के चरित्र पर भी हो सकता था। एक बार संघर्ष होने के पश्चात् प्रहार किस ओर से होता है, यह कभी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। हाँ, घात पर प्रतिघात होता है, यह स्वाभाविक नियम है। (कुछ ठहर कर) अब मुझे और कुछ न कहकर केवल इतना ही कहना है कि यदि

आप लोग गंभीरतापूर्वक विचार करके देखेंगे तो आपको मालूम हो जायगा कि यूनियन क्लब में आज जो प्रश्न उठा है वह यथार्थ में केवल मिस कृष्णाकुमारी और मुझसे सम्बन्ध नहीं रखता। यह तो स्त्री और पुरुष-समाज के पारस्परिक व्यवहार की जड़ से सम्बन्ध रखता है। मेरे चरित्र पर आक्षेप करनेवाले इश्तहार निकलने के पश्चात् भी मेरे हृदय में मिस कृष्णाकुमारी के प्रति किसी प्रकार के रोष की उत्पत्ति नहीं हुई थी, मैंने यह निश्चय नहीं कर लिया था कि उसमें उनका और उनके दल का ही हाथ है, यद्यपि मैं यह सच-सच कह देना चाहता हूँ कि मुझे भी उनके दल पर सन्देह हुआ था, पर इतने पर भी मैंने यूनियनक्लब में उनके या उनके दल के विरुद्ध कोई प्रस्ताव उपस्थित नहीं किया, और न किसी से कराया ही। मुझे खेद है कि मिस कृष्णाकुमारी उनके चरित्र पर आक्षेप होनेवाले पर्चे के निकलते ही मुझे और मेरी पार्टी को ही निश्चयपूर्वक उसके लिए दोषी मानती हैं, और मिस विजया इस प्रकार का प्रस्ताव इस क्लब में उपस्थित कर रही हैं। मैं इस प्रकार के विज्ञापनों को बहुत बुरा मानता हूँ, मेरा यह भी मत है कि सार्वजनिक जीवन

का यह बड़ा काला पहलू है, किन्तु क्या किया जाय ? संघर्ष का यह अनिवार्य परिणाम जान पड़ता है। इस संघर्ष में स्त्री-समाज का खिंच आना मुझे अत्यन्त दुःख पहुँचाता है। मेरा मत है कि उनके इस क्षेत्र में आ जाने से हमारे गृहों में जो थोड़ा-बहुत सुख रह गया है वह भी न रह जायगा। परन्तु कदाचित् मनुष्य-समाज के भाग्य में अभी और दुःख ही बदा है। (बैठ जाता है। तालियाँ बजती हैं।)

कृष्णाकुमारी – (खड़ी होकर) सभापति महोदय, भाइयो और बहनो, मैं सर्वप्रथम मिस्टर त्रिवेणीशंकर शर्मा को उनके अत्यंत सुन्दर भाषण पर बधाई देती हूँ।

कुछ व्यक्ति—हिअर हिअर ! हिअर हिअर !

कृष्णाकुमारी—मिस्टर शर्मा ने, इसमें सन्देह नहीं, अपने भाषण में विषय का तात्त्विक दृष्टि से प्रतिपादन किया है। यद्यपि उनकी कही हुई अनेक बातों से मैं सहमत नहीं हूँ, तथापि इतना मैं अवश्य मानती हूँ कि यदि महिलाएँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से स्पर्द्धा करना चाहती हैं तो उन्हें पुरुषों से परित्राण-शूरता के नाम पर किसी बात की आशा न रखनी चाहिए, बरन् मैं तो मिस्टर शर्मा के भाषण के पश्चात् उस समय

का स्वप्न देखने लगी हूँ, जब महिला-वर्ग पुरुष-वर्ग की रक्षा का भार अपने कन्धों पर लेगा।

त्रिवेणीशंकर—(मुस्कराकर) इएटरप्शन के लिए क्षमा। (कृष्णाकुमारी बैठ जाती है।) पुरुष-वर्ग की रक्षा का भार तो एक प्रकार से अब तक भी आप लोगों के कन्धों पर ही रहा है, मिस कृष्णाकुमारी, और भविष्य में भी रहनेवाला है। आप ही तो पुरुषों को उत्पन्न करती हैं। उनकी उस समय रक्षा करती हैं, जब आपके अतिरिक्त कोई उनकी रक्षा की सामर्थ्य ही नहीं रखता। उन्हें पाल-पोसकर आप ही बड़ा करती हैं और तब अपनी रक्षा का भार उन्हें सौंपती हैं। (बैठ जाता है।)

कृष्णाकुमारी—(खड़े होकर) नहीं, पुरुषों के बड़े होने पर भी अब हम उनकी रक्षा करना चाहती हैं। अपनी सीमा-बद्धता से हम ऊब उठी हैं। हमारे समस्त दुःखों की जड़ें ये सीमाएँ ही हैं। ये सीमाएँ ही हमारे उत्कर्ष के लिए बाधक हैं। हम इन सीमाओं को तोड़ देना चाहती हैं।

त्रिवेणीशंकर—सीमा-बद्धता नैसर्गिक नियम है।

कृष्णाकुमारी— कौन-सी सीमा नैसर्गिक है और कौन-सी कृत्रिम, यह कहना सरल नहीं है, मिस्टर शर्मा।

इतना ही नहीं आज तक के बड़े से बड़े दार्शनिक और तत्त्ववेत्ता भी एक मत से इस सम्बन्ध में कोई निश्चयात्मक निर्णय नहीं कर सके हैं। खैर, जो कुछ हो, इस स्पर्द्धा में, इस संघर्ष में हमने सोच-समझकर ही पैर रक्खा है और हम पुरुषों के द्वारा अपनी रक्षा नहीं चाहतीं। (विजया से) बहन, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपना प्रस्ताव वापस ले लो। (बैठ जाती है। तालियाँ बजती हैं।)

यवनिका-पतन

समाप्त